जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन का मुखपत्र

अंक - 3 | जुलाई , 2023

मोरछले उत्सव विशेष

वसुंधरा समाचार

'Vasundhara' is a multi-locational cultural forum dedicated to *literature, arts, theater* and *cinema*.

At our innovative book stores located at **Powai (Mumbai)** and Adarsh **Nagar (Jaipur)**, we stock books in *Hindi, English and Marathi* on diverse subjects including fiction, poetry, drama, philosophy, religion, travel, environment, recreation, history, current affairs, gender equality, health, food etc. etc. by international authors as well as writers from Indian languages, including classics as well as current prize winning titles.

We offer attractive discounts on all books, offer special offers from time to time and also deliver books at your doorstep through our website. Our section for junior readers offers books and activity books for children of all ages. If your desired title is not available with us, we will arrange to procure it for you as soon as possible.

If you have a passion for books and related cultural activities, do join us and participate in activities of ***'Vasundhara'***. We also invite you to take membership of ***'Vasundhara Manch'*** and ***'Vasundhara Book Club'***.

'Vasundhara' is also engaged in organizing cultural programmes, literature readings, talks and music related activities. Our registered society ***'Vasundhara Manch'*** also arranges **film screenings** of artistic world and Indian cinema at Jaipur. Our bulletin ***'Vasundhara Samachar'*** details these activities.

'Jan Vasundhara Sahitya Foundation' *is a non-profit organization. All donations to Jan Vasundhara Sahitya Foundation qualify for Income Tax rebate under Section 80G of Income Tax.*

'वसुंधरा' एक व्यापक सांस्कृतिक मंच है—साहित्य, कला, रंगमंच और सिनेमा का!

हमारे पवई (मुंबई) और **आदर्श नगर (जयपुर)** स्थित पुस्तक केन्द्रों में आप हिंदी, अंग्रेज़ी और मराठी की उत्कृष्ट पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीद और पढ़ सकते हैं। यहाँ आपको उपन्यास- कहानी, कविता और नाटक के अलावा सिनेमा, रंगमंच, यात्रा, दर्शन, धर्म, शायरी, हास्य-व्यंग, पर्यावरण, इतिहास, लैंगिक समानता, समसामयिक सामाजिक-राजनीतिक, भोजन, स्वास्थ्य आदि आदि पर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों का एक समृद्ध और विविध संग्रह मिलेगा, जिसमें क्लासिक्स के साथ-साथ नवीनतम पुरस्कृत पुस्तकें शामिल हैं। इन्हें आप हमारे पुस्तक केन्द्रों के अलावा व्हाट्सएप/वेबसाइट से घर बैठे भी मंगा सकते हैं।

हम पोस्टर भी स्टॉक करते हैं। जूनियर पाठकों के लिए हमारे विशेष खंड में सभी उम्र के बच्चों के लिए किताबें और गतिविधि पुस्तिकाएं मिलेंगी। एक नीति के तहत हम सभी पुस्तकों पर न्यूनतम छूट देने के अलावा समय-समय पर विशेष ऑफर भी घोषित करते हैं। यदि संयोगवश आपकी पसंद की कोई पुस्तक हमारे पास नहीं है तो हम उसे आपके लिए यथाशीघ्र मंगवाने की व्यवस्था करेंगे।

'वसुंधरा' अपने केन्द्रों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कविता-कहानी पाठ, संगीत, चर्चाओं आदि का भी आयोजन करती हैं। जयपुर केंद्र में स्थित पंजीकृत सांस्कृतिक सोसाइटी **'वसुंधरा मंच'** विविध सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा अपने सदस्यों के लिए भारत और विश्व की उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन भी करती है। इन गतिविधियों की ताज़ा जानकारी आप 'वसुंधरा समाचार' से प्राप्त कर सकते हैं।

अगर पुस्तकों और सांस्कृतिक गतिविधियों में आपकी रुचि है तो **'वसुंधरा'** आएं और इन प्रगतिकामी प्रयासों में हमारे हिस्सेदार बनें। हम आपको **'वसुंधरा बुक क्लब'** और **'वसुंधरा मंच'** का सदस्य बनने के लिए भी आमंत्रित करते हैं। आपकी जानकारी के लिए **'जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन'** एक गैर-लाभकारी संस्था है।

मोरछले उत्सव

शनिवार 20 और रविवार 21 मई को वसुंधरा मंच पर एक अभूतपूर्व आयोजन रचा गया। इस आयोजन के केंद्र में रहे **प्रवीण मोरछले और उनकी विलक्षण फ़िल्में।** एक ऐसे **प्रतिभाशाली नए भारतीय फ़िल्मकार** और उनका सिनेमा जिनकी फिल्मों ने अनेक **अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार** कमाए।

PRAVEEN MORCHHALE

Who has been hailed by critics all over the world as an important filmmaker of the Indian new wave.

साल 2018 में आई मोरछले की **WIDOW OF SILENCE** को वसुंधरा मंच पर दिखा देने के बाद हमने इस उत्सव में उनकी तीन अन्य फ़िल्मों का प्रदर्शन और **मोरछले स्पेशल टॉक शो** रखा। वसुंधरा में 20 मई की फ़िल्म रही 2017 की लद्दाखी-हिंदी पुरस्कृत **WALKING WITH THE WIND** (78 मिनट) और 5 वर्ष बाद इस फ़िल्म के वास्तविक पात्रों की खोज में निकली यात्रा की दूसरी विलक्षण फ़िल्म **COLOURS OF LIFE** (58 मिनट)

इन दोनों ही हिंदी फिल्मों में लद्दाख की स्तब्ध कर देने वाली दृश्यावली और जीवन से निकले वास्तविक पात्र दर्शकों का मन मोह लेते हैं। और दोनों बेहतरीन फिल्मों ने **अनेकानेक राष्ट्रीय /अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार** अपने नाम किए हैं। इन फ़िल्मों को **फिल्मकार के साथ** बैठकर देखने का एक विरल अनुभव इस शनिवार वसुंधरा सदस्यों ने प्राप्त किया। ऑनलाइन बातचीत में जुड़े प्रवीण जी ने अपने रंगमंच प्रेमी होने के साथ फ़िल्में बनाने के कई **"pros and cons"** साझा किए तो कई जगह **कला में अति बाजारवाद** को नकारा। इस बातचीत की एक छोटी रिपोर्ट भी हमने तैयार की है जिसे नीचे पढ़ा जा सकता है। और पूरी बातचीत भी आपके लिए यूट्यूब पर दर्ज़ है।

उत्सव के समापन दिवस पर मोरछले ने अपनी ताजा हिंदी फ़िल्म **SIR MADAM SARPANCH** के **premier show** के ज़रिए हम सदस्यों की **हरिशंकर परसाई** से भेंट करवाई।

सम्पादक~ चेतना शर्मा

" मैं अच्छी फ़िल्में बनाना चाहता हूँ "

मोरछले उत्सव में फ़िल्में देखने और उनपर विचार-विमर्श के साथ संस्था प्रधान आदरणीय जितेंद्र भाटिया जी ने फ़िल्म निर्देशक प्रवीण मोरछले से भी वसुंधरा सदस्यों को **ऑनलाइन बातचीत सत्र** के ज़रिए मिलवाया। जहाँ वसुंधरा सदस्यों ने निर्देशक को वास्तविक और ज़रूरी विषयों पर फ़िल्म बनाने के लिए धन्यवाद दिया और एक एक कर इन विलक्षण फिल्मों पर कई सवाल पूछे, राय रखी और अपने अंदाज़ में समीक्षा भी की। **लेखिका सुधा अरोड़ा जी** ने प्रवीण जी की तीनों फ़िल्मों की **भाषा, एक्टिंग और दृश्यों** पर अपना बारीक दृष्टिकोण रखते हुए कई संवादों को दोहराया और उन्हें फ़िल्म का ज़रूरी हिस्सा बताया। सदस्य **विशाल विक्रम** ने **विडो ऑफ़ साइलेंस** और **वाकिंग द विंड** की घटनाओं और दृश्यों में कश्मीर और लद्दाख के वास्तविक जीवन को हू-ब-हू पाया, उनका कहना है कि- "आपकी पूरी फ़िल्म में कहीं सनसनी नहीं मिलती।"

फिल्मों के कॉमर्शियलाइजनिंग से परहेज़ रखने वाले मोरछले कहते हैं **"मेरी फ़िल्मों में ड्रामा न के बराबर व रियलिज्म अधिक होता है। एक कलाकार होने के नाते यही मेरे कहानी कहने का ढंग है।"**

आदरणीया रेणु जी ने इन फिल्मों की सरलता से जीवन

जीने के तौर तरीके सीखने की बात कही और **अजय गोयल** जी ने ओटीटी व अन्य प्लेटफार्म पर इन फिल्मों की माँग रखी। वसुंधरा सदस्यों के साथ ऐसे ही कई रोचक सवाल-ज़वाब का यह पूरा सत्र इस लिंक पर देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=2ORelPjZGVs

इस पूरी बातचीत में मोरछले ने ईमानदारी और भावुकता से भरकर कहा कि "मैं अच्छी फ़िल्में बनाना चाहता हूँ। यह निर्देशक के मानवीय मन की पोल पाठकों के सामने खोलकर रख देता है।"

In May last week, courtesy Mr Jitendra Bhatia's passion for sharing good cinema, we got to see the repertoire of Mr. Praveen Morchhale's works. Live interaction with the director was not just an icing on the cake, but made the audience aware of the constraints within which the artist operates. Here are my comments on what worked for me...

~ Ajay Goyal

Sir Madam Sarpanch

A satire, replete with the political/ bureaucratic absurdities of New India. What impressed me more was the audacity of the director, when 'dissent' has got a bad rap and the government is drawing ever-shrinking lines around freedom of expression. OTT platforms have already refused his earlier movies, for being too political (i.e. risky), and he has a dossier of experiences getting them through the Censor Boards. Yet he chose to make this movie and for that alone, I applaud his courage.
As for the craft, the movie was a breath of fresh air. Characters are neither black nor white nor any shade of grey; the director has drawn them as kooky oddball caricatures. The message is light-hearted/ tongue-in-cheek, and not confrontational or preachy. If the audience gets the joke, fine, else Praveen moves on to the next skit. And there are plenty—references to 'New India' $5 trillion economy, social media, textbooks revision, demonetization, structures not able to support books weight...

The movie is tough to slot into a genre—it's less of a 'Panchayat' or a 'Kathal', more of "Jaane bhi do Yaron". Perhaps India has got a worthy addition to the likes of Sudhir Mishra, Abhinav Sinha, Anurag Kashyap, or Hansal Mehta, who have not shied away from showing the mirror to us from time to time.

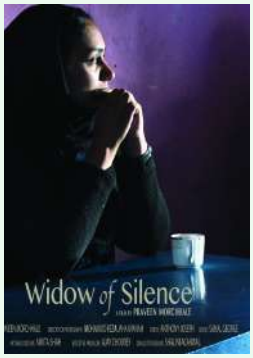

Widow of Silence

The plight of 'Half-Widows' of Kashmir valley is four decades old now, often presented on silver screen from differed POVs. With that caveat, I have to admit that the story did not appeal to me as much.

What shines through the movie is Praveen's observant script and sensitivity—Registrar telling the heroin - "You won't be able to prove before your death that you are alive." And his uses of metaphor like tying up the grandma before the ladies of the house go out to their respective vocations. Or the philosophical banter of the taxi driver who is trying to reconcile to the valley's (and his) fate that has turned topsy-turvy - "silence gives people the chance to think' he says at one time and at another - 'Wadis make a poet out of you'.

The scene where the daughter tears up her missing father's picture, and then tries to rearrange the pieces, is heartrending —Praveen does not vocalize the sentiment, if the viewer doesn't get it that's fine, it's not his responsibility to sensitize the audience if they can't feel the injustice before their eyes.

Walking with the Wind

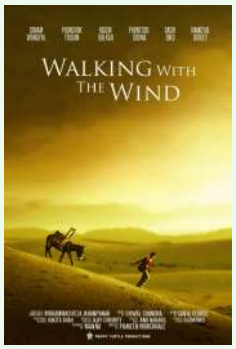

As fresh as a gurgling, cool Ladakhi water stream on a 41 C scorching afternoon! The young student, out to repair a broken school chair, becomes an adorable symbol for the innocence of the valley, where life is tough yet smiles are honest. Again, lots of metaphors are left for the audience to discover and process. This is the film that'll lend to the de-layering of more nuances in a second viewing.

Some scenes stood out to me—a farmer switching back the water channel, so that the young kid can get the flour for an evening meal—the ethics of this transaction are so subtle that you may even miss it. I chuckled when a Muslim artisan gets all worked up when his cow goes missing, haha, well played Mr. Director!

The film is a slow and serene shot in a semi-documentary style—dialogues are minimal and meaningful, the use of day-to-day sounds of Ladakh (instead of B/G music) works well & Praveen's ability to elicit performances from the locals lends authenticity. Viewers of Vasundhara may recall Abbas Kiarostami's "Where is my friend's House" shown some months back. His tribute to showing the movie to the locals at the Leh festival was a warm gesture.

एक निर्देशक के तीन फ़िल्में

वसुंधरा मंच पर कुछ दिन पहले एक निर्देशक की तीन फ़िल्में एक साथ देखने का मौक़ा मिला। प्रवीण मोरछले जो की मेरे लिए एकदम नया नाम था। इनकी फ़िल्में देखना भी मेरे लिए एक नया अनुभव रहा। ये तीनों फ़िल्में हैं,

'वॉकिंग विथ द विंड' | 'कलर्स ऑफ़ लाइफ़' | 'सर मैडम सरपंच'

वॉकिंग विथ द विंड

इस फ़िल्म के माध्यम से डायरेक्टर ने आज के भौतिक युग में लद्दाख के सादा जीवन को ख़ूबसूरती से दर्शाया है। फ़िल्म में छोटी -छोटी घटनाओं को इस कदर पिरोया गया है जो वहाँ के जीवन, संस्कार और परवरिश को सहजता से एक बच्चे के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाती है।

एक छोटे-से लड़के द्वारा टूटी कुर्सी को घर तक लाना। फिर उसे ठीक कराने के लिए कारपेंटर की खोज पर निकलना और अंत में कुर्सी ठीक करा अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाना। यह दृश्य पहाड़ी लोगों के ख़ुश रहने का राज खोलता है। हालाँकि फ़िल्म की गति थोड़ी धीमी है, पहाड़ का जीवन ऐसा ही है इसलिए इस तरह धीमी गति में फिल्माकंन उस माहौल की ज़रूरत हो सकता है। पहाड़ी परिवेश की सादगीपूर्ण कहानी कहती इस फ़िल्म की विशेषता यह है कि इसमें भूमिका निभाने वाले सारे किरदार फ़िल्मी कलाकार ना होकर वहाँ के स्थानीय लोग ही हैं। मुझे यह फ़िल्म ईरानी फ़िल्म "वेयर इज माय स्कूल" की याद दिलाती है।

प्रवीण जी ने दूसरी फ़िल्म **"कलर्स ऑफ लाइफ़"** पाँच साल बाद तब बनाई जब पहली फ़िल्म को अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म फ़ेस्टिवल लेह में दिखाया जाना था। इन्हें ख़याल आया कि क्यों न पहली फ़िल्म के सभी कलाकारों को इस फ़िल्म को दिखाने के लिए लद्दाख से लेह लाया जाए। प्रवीण जी लद्दाख पहुँचें और वहाँ उन्होंने पहली पिक्चर में काम करने वाले किरदारों से मुलाक़ात की और उनसे बातचीत कर बस से लद्दाख कि ड्रेस में उन्हें लेह लेकर आए।

फ़िल्म दिखाने के बाद आप सब कलाकारों को लद्दाख छोड़ने भी गए। फ़िल्म देखने जाते वक़्त इन कलाकारों के चेहरों का कौतूहल देखते बनता था। सारे चेहरे आश्चर्य में थे। सबके दिमाग सोचते थे कि आख़िर वे फ़िल्म में कैसे दिखते होंगे।

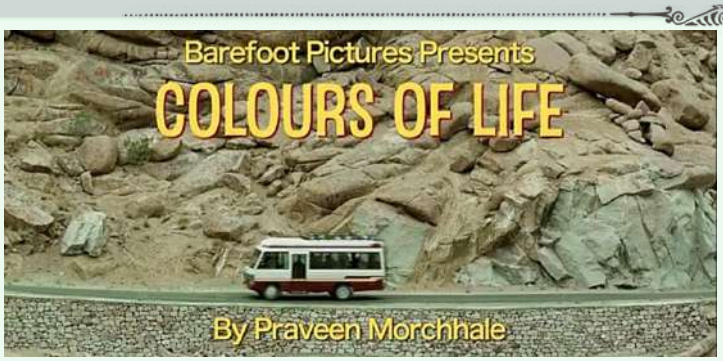

जीवन को नजदीकता से जीने वाले प्रवीण जी ने किरदारों की इस जिज्ञासा और हाव-भाव को भी कैमरे की आँख से हम तक पहुँचाया! फ़िल्म देखने के उपरांत जब सब कलाकारों से प्रवीण जी ने उनकी प्रतिक्रिया जानी, तो वे सब ख़ुश थें। बुजुर्ग दादी आश्चर्य में थीं। एक युवा लड़की को तो जैसे बॉलीवुड में जाने का लाइसेंस मिल गया हो। इसी तरह के भाव युवा होते "टीन-एजर" लड़कों के सपाट चेहरों पर भी बनते थें। यह सीधे-सादे लद्दाख के जन-सामान्य को इस तरह सिल्वर स्क्रीन पर दिखाया जाना मानवीय मन के बेहद करीब का एक नया प्रयोग था।

निर्देशक की तीसरी फ़िल्म **"सर मैडम सरपंच"** नारी सशक्तिकरण का अच्छा उदाहरण पेश करती है।

इस फ़िल्म में राजनैतिक स्टायर के साथ-साथ ही सकारात्मक अंत भी है जो सही लोगों को राजनीति में आने के लिए प्रेरित करता है । हालाँकि फ़िल्म में स्टायर का स्तर उतना गंभीर और मारक नहीं है किंतु हल्के-फुल्के अंदाज़ में बयां किया हुआ रंग ज़रूर है। यह फ़िल्म यूट्यूब पर भी उपलब्ध है। और ख़ास बात यह है कि इस फिल्म में भी सभी कलाकार फ़िल्मी कलाकार नहीं हैं। बल्कि जन सामान्य लोग हैं। उसी पंचायत के लोग जिसकी मैडम सरपंच नायिका है।

मानवीय जीवन के बेहद करीब की ये तीनों फ़िल्में थोडी स्लो जरूर हैं। लेकिन दर्शकों की उत्सुकता को बराबर बरकरार रखती हैं।

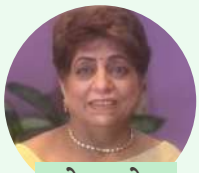

~ रेणु जुनेजा

इस माह वसुंधरा मंच पर

July - 2023

SUN	MON
25	26
2	3
9	10
16	17
23	24
30	31

16/07/23

रविवार 16 जुलाई को मराठी रंगमंच के अतुलनीय गायक और अभिनेता **नारायण श्रीपद राजहंस** (Narayan Shripad Rajhans) की जीवन गाथा दिखाई गई। बालगंधर्व के रुप में **सुबोध भावे** के अद्भुत अभिनय और **आनंद भाटे** के मंत्रमुग्ध कर देने वाले गायन ने सदस्यों के लिए इसे **"भावनाप्रधान संगीतमय फ़िल्म"** बना दिया।

23/07/23

फ़िल्म प्रदर्शन की कड़ी में इस रविवार हमने देखी **भारतरत्न** प्राप्त मशहूर शहनाई वादक **बिस्मिलाह खां साहब** की डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म **"संगे मील से मुलाक़ात"** और उसके पश्चात वसुंधरा पर जयपुर के प्रसिद्ध वायलिन वादक गुलजार साहब द्वारा संचालित गुलजार वायलिन एकेडमी के छात्रों **Sujaan Hussain violinist, Zeyaan Hussain Tabla player, Priyansh Bhargav violinist** ने राग ललित की बंदिश का अद्भुत प्रदर्शन कर वसुंधरा सदस्यों का दिल जीत लिया।

वायलिन प्रोग्राम Jan Vasundhara Sahitya Foundation के फेसबुक व इंस्टाग्राम पेज़ पर भी देखा जा सकता है।

कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर

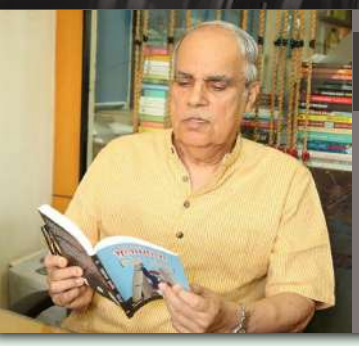

लेखक परिचय - जितेन्द्र भाटिया

कथाकार-उपन्यासकार-निबंधकार जितेन्द्र भाटिया ने 'सदी के प्रश्न', 'इक्कीसवीं सदी की लड़ाइयाँ', 'बस्ती बस्ती परबत परबत', 'कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर' एवं कुछ धारावाहिक लेखन के जरिये हमारी 'सभ्यता, विकास और उन्माद' को बौद्धिक रूप से न केवल प्रश्नांकित किया है बल्कि मीमांसा करते हुए उसे ऐतिहासिक रूप से देखने-समझने की दृष्टि भी दी है।

~ कुमार अम्बुज (फेसबुक वॉल से)

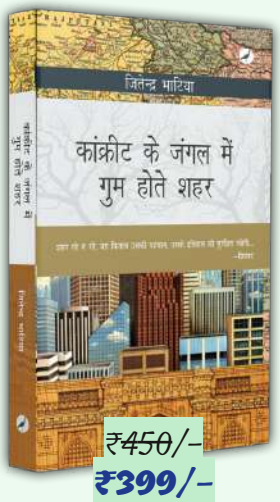

~~₹450/-~~
₹399/-

"शहर रहे न रहे, यह किताब उसकी पहचान, उसके इतिहास को सुरक्षित रखेगी " ~ प्रियंवद

बंगाल पर मराठा सैनिकों के द्वारा किये गए हमलों के विषय में तथ्यगत जानकारी मुझे इसी किताब से हुई है आप भी पढ़िये।

साठ साल पहले जॉब चार्नोक द्वारा बसाया वह दलदली, मच्छरों और कीचड़ से भरा ठिकाना इस बीच कोलकाता के गहमा-गहमी वाले महानगर में तब्दील हो चुका था। नदी के दोनों ओर गोदामों और जेटियों की क़तारें उग आयी थीं और फ़ोर्ट विलियम के बराबर अब ग्रीक शैली की कई शानदार इमारतें दिखाई देने लगी थीं। कंपनी के गवर्नर रॉजर ड्रेक का महल, एक स्कूल, बच्चों का खेल का मैदान, सेंट ऐन की प्रोटेस्टेंट और सेंट नाज़रेथ की आर्मेनियन चर्च, अस्पताल, जेल, पानी की बड़ी सी टंकी और इन सबके साथ एक भरा-पूरा कब्रिस्तान! कोलकाता में अब कोई दो लाख बाशिंदे रहने लगे थे, जिनमें कोई एक हज़ार अंग्रेज़ और बाक़ी हिंदुस्तानी थे। नदी पर जहाज़ों की गोदी थी, शराबखाने आबाद थे और सड़कें भरी-पुरी तथा व्यस्त नज़र आती थी। मुग़लों के समय बनी हुगली की जेट्टी पर पहले से दुगुने जहाज़ खड़े दिखाई देने लगे थे और उनसे उतरने वाले कप्तानों और नाविकों की भीड़ शराब में अपना ग़म ग़लत करने के बाद सीधे कोलकाता के बदनाम वेश्याघरों की ओर जाने के लिए उतावली दिखाई देती थी!

...बाहर से वहाँ आकर बसने वालों के लिए गोरों द्वारा संचालित इस शहर का सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ की शांति और सुरक्षा थी। यहाँ से बाहर बंगाल भयानक नरसंहार से गुज़रा था। मराठा सैनिकों (बर्गियों) ने 1741 से 1751 के बीच बंगाल पर छह बार हमला किया था और इन नृशंस हमलों में कोई चार लाख असैनिक नागरिक अपनी जान खो चुके थे। आख़िरी बार 1750 में मराठा सेना के भास्कर पंडित ने बीस हज़ार सैनिकों के साथ बंगाल पर हमला बोला था। वे रात के समय हमला कर नवाब के ठिकानों पर अन्न और भोजन पहुँचाने वाले वाहनों को नष्ट कर आसपास के गाँवों में आग लगा देते थे, ताकि उनके सैनिक भूख से घबराकर भाग जाएँ। गाँव वालों की फसलें जलाकर वे घरों में भी आग लगा भयानक लूटपाट करते थे। गर्भवती स्त्रियाँ और बच्चे, मुसलमान और हिन्दू, कोई उनके कहर से अछूता नहीं था। अपनी बंगला कविता 'महाराष्ट्र पुराण' में उस समय के जनकवि गंगाराम ने लिखा— आमार मुलुक तूमम लूटिला बारोर बारोर (तुमने मेरा देश लूटा, बार-बार)

कोई बच नहीं पाया, न ब्राह्मण, न वैश्य, न सन्यासी न गृहस्थ, सब का एक ही हाल हुआ, मनुष्यों के साथ गौएँ भी काट दी गयी—देश में इस प्रकार का क़त्ल-ए-आम देश के इतिहास में शायद ही पहले कभी हुआ होगा।वेब पत्रिका 'स्क्रोल' में शोएब दानियाल आज की स्थितियों पर सवाल करते हैं— हमारे इतिहास के जो संदर्भ हमारी ध्रुवीकृत हिन्दू-बनाम मुसलमान सोच के विपरीत जाते हैं, उन्हें हम सुविधा के साथ बहस से बाहर निकाल देते हैं। 1741 तथा 1751 के बीच मराठों के बंगाल पर हमले इसी लीपापोती का एक पुख़्ता उदाहरण है!

(के एन चौधुरी, जदुनाथ सरकार—'फॉल ऑफ़ दि मुग़ल एम्पायर', कौशिक राय—'ईस्ट इंडिया कंपनी' और गंगाराम—'महाराष्ट्र पुराण', 'स्क्रोल, 2015' तथा 'डैलरिम्पल' के संदर्भों से)

यह एक विडंबना थी कि मराठों द्वारा बंगाल का एक दशक लंबा जनसंहार ईस्ट इंडिया कंपनी और नवनिर्मित शहर कोलकाता के लिए कुछ हद तक उपयोगी ही साबित हुआ था। मराठों ने अपनी सुविधा के अनुसार सेनाओं से अधिक सामान्य लोगों को अपने अत्याचार का निशाना बनाया था, क्योंकि कंपनी की ताक़तवर तोपों और दक्ष सैनिकों के आगे उनकी तलवारें कमज़ोर दिखती थी। मराठा सेना से बचने के लिए कंपनी ने कोलकाता शहर के चारों ओर एक गहरी खाई खोद दी थी, जिसके कारण स्थानीय बंगालियों को यही इलाक़ा सबसे सुरक्षित दिखाई देने लगा था और इसी के चलते उस एक दशक में ही शहर की जनसंख्या लगभग तिगुनी हो गयी थी! यद्यपि शहर में विदेशी नागरिक और सिपाही काफ़ी कम थे, लेकिन संभवतः उनकी बंदूक़ों और तोपों या फिर उनके फ़्रांसीसियों के साथ मिलकर एक हो जाने की संभावना से डरे मराठा सैनिकों ने कभी कोलकाता पर हमला नहीं किया।

'अकार Vol-63' FREE with FIRST THREE copies!

किताबें सीधे आपके दरवाजे पर मंगवाने के लिए अभी 82094 51655 WhatsApp करें।

For more collections and Special Offers, please visit- www.vasundharabooks.com

Find us 'Jan Vasundhara Sahitya Foundation' vasundhara.sahitya@gmail.com

'वसुंधरा समाचार' -- जन वसुंधरा फाउंडेशन का मासिक मुखपत्र (केवल सदस्यों के लिए) (For private circulation only)
संयोजन और सम्पादन -- चेतना शर्मा मुम्बई प्रतिनिधि -- रेखा जिन्दे लेआउट -- सागर कोवे